Office of The sadar Majlis Ansarullah Bharat
دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت
Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक **20.01.17** मस्जिद बैतुल फ़तूह लंदन।

जमाअत के प्रत्येक व्यक्ति तक नमाज़ के महत्त्व का सन्देश बार बार पहुंचाएँ

वास्तव में तो अहमदी होने का हक़ उस समय अदा कर सकेंगे जब हम अपनी नमाज़ों की सुरक्षा करते हुए उनसे आध्यात्मिक आनन्द उठाने वाले होंगे

तशह्हुद, तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- हममें से कौन नहीं जानता कि मुसलमानों पर नमाज़ फ़र्ज़ है। क़ुरआन-ए-करीम में कई स्थानों पर नामज़ का महत्त्व भिन्न भिन्न प्रकार से बयान करके इसकी ओर ध्यानाकर्षित किया गया है। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी फ़रमाया कि नमाज़ इबादत का आधार है बल्कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यहाँ तक फ़रमाया कि नमाज़ को छोड़ना इंसान को कुफ़्र तथा शिर्क के निकट कर देता है। फिर आपने नमाज़ का महत्त्व बयान फ़रमाते हुए फ़रमाया कि क़्यामत के दिन सर्वप्रथम जिस चीज़ का बन्दों से हिसाब लिया जाएगा, वह नमाज़ है।

फिर बच्चों को भी नामज़ का पाबन्द बनाने के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि सात साल की आयु का होने पर बच्चों को नमाज़ के लिए प्रेरित करो और दस वर्ष की आयु में उसको नमाज़ का पाबन्द करने के लिए कोई कठोर व्यवहार भी करना पड़े तो करो। यदि माँ बाप ही नमाज़ों के पाबन्द न हों तो बच्चों को किस प्रकार कह सकते हैं अथवा यदि बच्चे अपने इजलासों या विभिन्न माध्यमों से यह हदीस सुन लें, आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद सुन लें, परन्तु घर में वे अपने बापों को नमाज़ का पाबन्द न देखें तो उन पर क्या प्रभाव होगा? निःसन्देह ऐसे बापों के बच्चे यह सोचेंगे कि इस आदेश का कोई महत्त्व नहीं है। सांसारिक इच्छाओं की पूर्ति के लिए, बच्चों की दुनयावी प्रगति के लिए तो माँ बाप चिंता व्यक्त कर रहे होते हैं परन्तु जो वास्तविक चिंता का विषय है उसकी चिंता भी नहीं होती। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क्या तुम समझते हो कि यदि किसी के घर के बाहर नहर चल रही हो तथा वह उसमें दैनिक पाँच बार स्नान करे तो उसके शरीर पर कोई मैल रह जाएगी। सहाबा ने कहा कि या रसूलुल्लाह! निःसन्देह कोई मैल नहीं रहेगी। इस पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया- तो फिर यही उदाहरण पाँच नमाज़ों का है। अल्लाह तआला उनके द्वारा पाप को क्षमा करता है तथा दुर्बलताओं को दूर करता है। पाँच नमाज़ें पढ़ने वाले की आत्मा पर कोई मैल नहीं रहती।

इस प्रकार यह है नमाज़ का महत्त्व जो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक सुन्दर उपमा के द्वारा बयान फ़रमाया है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिस व्यक्ति ने घर से वज़ू किया फिर

वह अल्लाह तआला के घर अर्थात मस्जिद की ओर गया ताकि वहाँ फ़र्ज़ नमाज़ अदा करे तो मस्जिद की ओर जाते हुए जितने क़दम उसने उठाए उनमें से यदि एक क़दम से उसका एक गुनाह माफ़ होगा तो दूसरे क़दम से उसका एक दर्जा बुलन्द होगा अर्थात प्रत्येक क़दम ही उसे सवाब देने वाला है।

फिर एक अवसर पर जमाअत के साथ नमाज़ के महत्त्व को आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस प्रकार बयान फ़रमाया कि क्या मैं तुम्हें वह बात न बताऊँ जिससे अल्लाह तआला पाप को मिटा देता है तथा दर्जों को बुलन्द करता है? सहाबा रिज़वानुल्लाहि अलैहिम ने जो हर समय इस बात के लिए व्याकुल रहते थे कि हमें कब कोई अवसर मिले और हम अल्लाह तआला को प्रसन्न करने का प्रयास करें, उसको प्रसन्न करने के साधन सीखें, उसकी निकटता प्राप्त करें, अपने गुनाहों से दूरियाँ पैदा करें, उन्होंने निवेदन किया, या रसूलुल्लाह अवश्य बताइए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया- दिल न चाहने के बावजूद ख़ूब अच्छी प्रकार वज़ू करना तथा मस्जिद में दूर से चल कर आना और एक नमाज़ के बाद दूसरी नमाज़ की प्रतीक्षा करना, यह गुनाहों से दूरियाँ पैदा करता है। आपने फ़रमाया- इतना ही नहीं, यह एक प्रकार का रबात है अर्थात सीमाओं पर छावनियाँ स्थापित करने के समान है। जिस प्रकार देश अपनी सुरक्षा हेतु सीमाओं पर छावनियाँ बनाते हैं, सेनाएँ रखते हैं, यह ऐसा ही है। इसी प्रकार जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने में, अकेले नमाज़ पढ़ने की तुलना में 27 गुणा अधिक सवाब है। इसके बारे में भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम बा-जमाअत नमाज़ का महत्त्व बयान फ़रमाते हुए एक स्थान पर फ़रमाते हैं कि-

नमाज़ में जो जमाअत का सवाब अधिक रखा है, उसका यही उद्देश्य है कि एकता पैदा होती है तथा फिर एकता को क्रियाशील रंग में लाने का यहाँ तक निर्देश एवं आदेश है कि पाँव भी परस्पर समानान्तर हों तथा सफ़ सीधी हो और एक दूसरे के साथ मिले हुए हों। इसका अभिप्रायः यह है कि ऐसा लगे मानो कि एक ही इंसान के समान हैं। यह ख़ूब याद रखो कि इंसान में यह शक्ति है कि वह दूसरे के प्रकाश को ग्रहण करता है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया- अतः यदि हम एक ओर तो यह दावा करें कि हमने अपनी रूहानी हालत की प्रगति तथा एकता की स्थापना के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम तथा मसीह मौऊद व महदी मअहूद को मान लिया है और दूसरी ओर हमारे कर्मों तथा विशेष रूप से मूलभूत आदेशों के पालन में कमज़ोरी हो, बुनियादी जो फ़र्ज़ है उसमें कमज़ोरी हो। उसी बात में कमज़ोरी हो जो हमारे जीवन का उद्देश्य है, उसी चीज़ में कमज़ोरी हो जो उस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए जो कम से कम स्तर अल्लाह तआला ने निश्चित फ़रमाया है, तो हम किस प्रकार दावा कर सकते हैं कि हमने अपनी रूहानी हालत की उन्नति तथा अल्लाह तआला के आदेशानुसार चलने के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेश पर लब्बैक कहते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को माना है। प्रत्येक सद्बुद्धि व्यस्क पुरुष के लिए नमाज़ पढ़ना अनिवार्य है, परन्तु इस बात को जब हम देखते हैं तो पूरा ध्यान नहीं है तथा दुर्बलता है। निःसन्देह एक वास्तविक मोमिन पर नमाज़ फ़र्ज़ है तथा इस बात का उसे स्वयं ध्यान रखना चाहिए, परन्तु जमाअत में एक निज़ाम भी स्थापित है, उस निज़ाम को भी इस ओर ध्यान दिलाते रहना चाहिए। इसका यथार्थ स्पष्ट करते रहना चाहिए। मैं प्रायः अपने सम्बोधनों में इस ओर ध्यान दिलाता रहता हूँ परन्तु उसे फिर आगे फैलाना मुरब्बियों तथा

निज़ाम-ए-जमाअत का काम है जमाअत के प्रत्येक व्यक्ति तक नमाज़ के महत्त्व का सन्देश बार बार पहुंचाएँ वास्तव में तो अहमदी होने का हक़ उस समय अदा कर सकेंगे जब हम अपनी नमाज़ों की सुरक्षा करते हुए उनसे आध्यात्मिक आनन्द उठाने वाले होंगे तथा जब यह आध्यात्मिक आनन्द एंव सरूर प्राप्त होना आरम्भ हो जाएगा तो फिर नमाज़ों की अदायगी की ओर भी अपने आप ध्यान पैदा हो जाएगा।

अतः जब अल्लाह तआला कहता है कि नमाज़ बुराईयों से बचाती है तो निःसन्देह यह सत्य है, अल्लाह तआला का कलाम झूठा नहीं हो सकता। जिन लोगों में नमाज़ पढ़ने के बावजूद बुराईयाँ शेष रहती हैं उनकी नमाज़े मात्र प्रत्यक्ष नमाज़ें होती हैं, वे इसकी रूह को नहीं समझते। अतः यह अत्यंत चिंता जनक बात है जिसपर हममें से प्रत्येक को अपनी अवस्था का निरीक्षण करना चाहिए।

कुछ जमाअतों में अच्छी हाज़िरी होती है नमाज़ों में, परन्तु फिर भी कोई न कोई नमाज़, किसी न किसी की छूट रही होती है तथा कई ऐसे हैं जो कई बार एक आध नमाज़ नहीं भी पढ़ते तथा इसका एक कारण जैसा कि मैंने कहा, यह भी है कि निज़ाम इसकी ओर ध्यान नहीं दिलाता तथा निज़ाम की भी अन्य प्राथमिकताएँ हैं। मेरे ख़ुत्बे, पहली बात तो यह है कि प्रत्येक सुनता ही नहीं। यह कहना कि शत प्रतिशत लोग सुनते हैं, यह भी ग़लत है और यदि सुन भी लें फिर भी निरन्तर याद दिलाते रहना जमाअत के निज़ाम का काम है, इसी लिए निज़ाम स्थापित किया गया है कि तर्बियत की ओर ध्यान रहे। पिछले दिनों यहाँ की एक जमाअत की मज्लिस-ए-आमला से मुलाक़ात थी तो सदर साहब ने बताया कि जब से मैं सदर बना हूँ आर्थिक निज़ाम की ओर मैंने बड़ा ध्यान दिया है तथा अब हम इसमें बड़ी तीव्रता के साथ अग्रसर हैं तो मैंने उन्हें कहा कि ठीक है यह प्रयास तो आपने किया परन्तु जो एक मोमिन के लिए आधार है तथा अनिवार्य है अर्थात नमाज़, उसके लिए आपने क्या प्रयास किया? तो इस बारे में ख़ामोशी थी। यद्यपि फ़ज्र और इशा की नमाज़ में उपस्थिति के विषय में मैंने जो जानकारी प्राप्त की तथा निरीक्षण किया तो उसमें जो विवरण सामने आया वह काफ़ी अच्छा था परन्तु निज़ाम का इसमें कोई योगदान नहीं था। यदि हर्ष एवं आनन्द उत्पन्न करने वाले नमाज़ी पैदा हो जाएँ तो आर्थिक व्यवस्था अपने आप ठीक हो जाएगी क्यूँकि तक़्वा का स्तर बढ़ने से ही माल की क़ुर्बानी की ओर ध्यानाकर्षित होता है और यही नहीं बल्कि उमूर-ए-आम्मा तथा कज़ा के विभाग की समस्याएँ जो हैं उनका भी उचित संख्या में निवारण हो जाएगा, बल्कि अन्य विभाग भी सक्रिय हो जाएँगे यदि नमाज़ें अदा करनी शुरु कर दें सारे। साधारणतः विश्व की परिस्थितियाँ ऐसी हैं कि युद्ध एवं विनाश का भय बड़ी तीव्रता से बढ़ रहा है। बहुत से लोग लिखते हैं कि युद्ध आरम्भ होगा तो क्या होगा, हम क्या करेंगे? तो उनको यही जवाब है कि यदि इन दुविधाओं से बचना है तो फिर जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है, ख़ुदाए ज़ुल-अजायब से प्यार करना होगा और इस प्यार का एक ही तरीक़ा है, अपनी नमाज़ों तथा अपनी इबादतों को उसके निर्देशानुसार ढालते हुए आनन्द एवं सरूर (हल्का नशा) पैदा करने का हम प्रयास करें।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं-

ख़ूब याद रखो और फिर याद रखो कि ग़ैरुल्लाह (अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य) की ओर झुकना ख़ुदा से काटना है। फ़रमाया- तौहीद की क्रियाशील अभिव्यक्ति नमाज़ है। तौहीद का मुंह से दावा तो कर दिया परन्तु उसके क्रियात्मक रंग में अभिव्यक्ति का नाम, तौहीद के अम्ली इज़हार का नाम नमाज़ है। फ़रमाया- नमाज़

और तौहीद कुछ ही हो, क्यूँकि तौहीद के अमली इज़हार का नाम ही नमाज़ है, उस समय बरकत हीन एवं असफल होती है जब इसमें विलीनता एवं विनयता की आत्मा तथा सुन्दर मन न हो। फ़रमाया- सुनो वह दुआ जिसके लिए ادعونی استجب لکم अर्थात मुझे पुकारो मैं तुम्हें जवाब दूँगा फ़रमाया, इस लिए ऐसी सच्ची आत्मा चाहिए। यदि इस विनयता एवं विलीनता में वास्तविक आत्मा नहीं तो वह टैं टैं से कम नहीं।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अतः जैसा कि पहले भी चर्चा हो चुकी है कि दुआ में विनम्रता एवं विलीनता हो तो फिर अल्लाह तआला क़बूल फ़रमाता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- इंसान की आत्मा जब विलीन हो जाती है तो वह ख़ुदा की ओर एक स्रोत की भांति बहती है तथा अल्लाह के अतिरिक्त वह प्रत्येक चीज़ से कट जाती है तो उस समय ख़ुदा तआला की मुहब्बत उस पर गिरती है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- जब ख़ुदा तआला की मुहब्बत इंसान पर गिरे तो फिर गुनाह जल कर नष्ट हो जाते हैं और फिर निरन्तर नमाज़ों में आनन्द की अवस्था पैदा हो जाती है। अतः यह शिकायत करने के बजाए अथवा ऐसा विचार दिल में लाने के बजाए कि हमारी नमाज़े हमें आनन्दित नहीं करतीं, हमें अल्लाह तआला से उस विशेष सम्बंध को स्थापित करने का प्रयास करना चाहिए। अपनी दशाओं पर विचार करें कि हम केवल टक्करें मार रहे हैं अथवा नमाज़ का हक़ अदा कर रहे हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- नमाज़ की व्यवस्था एवं पाबन्दी बड़ी आवश्यक बात है ताकि पहली बात यह है कि वह एक सुदृढ़ आदत की भांति स्थापित हो तथा अल्लाह की ओर लौटने का ध्यान हो। फिर धीरे धीरे वह समय अपने आप आ जाता है जबकि पूर्णतः विलीनता की हालत में इंसान एक नूर तथा एक आनन्द का उत्तराधिकारी हो जाता है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अतः पहले नमाज़ की आदत आवश्यक है, अपने आपको नमाज़ों का पाबन्द करना अनिवार्य है। चाहे नमाज़ों का लाभ दिखाई देता हो कि न देता हो परन्तु नमाज़ें हर हाल में पढ़नी हैं, क्यूँकि ये फ़र्ज़ हैं और यह समझकर आदत आवश्यक है कि मैंने प्रत्येक दशा में अल्लाह तआला की ओर ही लौटना है, उसके पास ही जाना है प्रत्येक आवश्यकता के लिए उसी से मांगना है। यह दृढ़ संकल्प यदि रहेगा तो फिर एक समय आएगा कि नमाज़ों के हक़ भी अदा होने आरम्भ हो जाएँगे, नमाज़ों में आनन्द भी आना शुरु हो जाएगा।

अल्लाह तआला हमें नमाज़ों की सुरक्षा करने का सामर्थ्य प्रदान करे, उनमें निरन्तरता स्थापित रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। अपनी नमाज़ों को विशुद्ध होकर अल्लाह तआला की प्रसन्नता के लिए अदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। हमारी नमाज़ों में आनन्द एवं सरूर पैदा फ़रमाए, कभी हम इसमें सुस्ती दिखाने वाले न हों तथा इस यथार्थ को समझने वाले हों कि आज दुनया की कठिनाईयों एवं दुविधाओं से हम उस समय मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं जब हम अल्लाह तआला की बन्दगी का हक़ अदा करने वाले होंगे। अल्लाह तआला हमें इसकी तौफ़ीक़ दे।